ज्योतिष का अर्थ एवं ज्योतिषशास्त्र का वेदाङ्गत्व

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

ज्योतिषशास्त्र को परमब्रह्म परमात्मा के मुख से निकले अपौरुषेय वेद का नेत्र कहा गया है, जिसका वर्णन सबसे पहले ब्रह्माजी ने स्वयं किया है और जिसके ज्ञानमात्र से मनुष्यों को धर्मसिद्धि प्राप्त हो जाती है। ज्योतिषशास्त्र भारतीयों की अमूल्य निधि है। यह जितना व्यापक है, उतना व्यावहारिक भी है। प्रयोगात्मक दृष्टि से वैज्ञानिकों तथा विद्वानों की गवेषणात्मक उत्कण्ठा की परितृप्ति के लिए इसमें अक्षुण्ण वस्तुभण्डार उपलब्ध है।

वेदांग ज्योतिष के अनुसार ज्योतिष समस्त वेदांगों में शिरःस्थानीय है। जिस प्रकार मयूर की शिखा उसके सिर पर रहती है। सर्पों के सिर में ही मणियाँ होती हैं, उसी प्रकार षडंगों में ज्योतिष शिरस्थान में ही प्रतिष्ठित है-

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्।।

ज्योतिष शब्द की व्युत्पत्ति ‘द्युतेरिसिन्नादेशश्च जः’ कहकर की गई है। अर्थात् ‘द्युत् दीप्तौ’ धातु से इसिन् प्रत्यय तथा दकार को जकारादेश करके ज्योतिष् या ज्योतिः शब्द बना, पुनः ‘अर्शआदिभ्योऽच्’ से अच् प्रत्यय करके ज्योतिष अकारान्त शब्द निर्मित हुआ है। पुनः ‘तदधिकृत्य कृतो ग्रन्थः’ इस पाणनीय सूत्र से अण् प्रत्यय करने पर ज्यौतिष शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ होगा ज्योतिषसम्बन्धी सिद्धान्त या ग्रन्थ। ‘शास्त्र’ शब्द की व्युत्पत्ति दो प्रकार से की जाती है- (1) ‘शासनात् शास्त्रम्’ अर्थात् करणीय-अकरणीय, कर्तव्याकर्तव्य के विषय में जो आज्ञा दे, वह शास्त्र है। (2) शास्त्रत्वं शंसनादपि अर्थात् किसी उद्देश्य विशेष जो सम्पूर्ण अर्थों का ज्ञान करा दे, वही शास्त्र है। दोनों व्युत्पत्तियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि को किसी वस्तु के स्वरूप को ठीक-ठीक समझा दे अर्थात् सत्य का ज्ञान करा दे, उसे

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

शास्त्र कहते हैं। अतएव ज्योतिषशास्त्र का अर्थ हुआ-ग्रह-नक्षत्रादि प्रकाशपिण्डों के माध्यम से सत्य का ज्ञान तथा अज्ञानादि की निवृत्ति।

मीमांसक कहते हैं कि 'औत्पत्तिकस्तु शब्दस्यार्थेन सम्बन्धः' अर्थात् शब्द और अर्थ एक साथ प्रकट हुए हैं। शब्द की उत्पत्ति के साथ ही अर्थ भी उत्पन्न होता है। इसी नियम के अनुसार ऋषियों ने नक्षत्रों, ग्रहों एवं राशियों का ज्योतिष नामकरण किया।

ज्योतिष मानव का परम हितैषी पथप्रदर्शक है। वह एक सच्चे मित्र की भाँति आपद्ग्रस्त मानव के दैहिक, दैविक, भौतिक विपद्-कारण को जानकर उसे उससे उबरने का उपाय बताता है।

वेदांगों में ज्योतिष का महत्त्वपूर्ण स्थान है। महर्षि पाणिनि ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है- 'ज्योतिषामयनं चक्षुः' जैसे मनुष्य बिना चक्षु-इन्द्रिय के किसी दर्शनीय वस्तु का दर्शन करने में असमर्थ होता है, ठीक वैसे ही वेदशास्त्र या वेद-शास्त्रविहित कर्मों को जानने के लिए ज्योतिष का महत्त्व सिद्ध है। भूतल, अन्तरिक्ष और भूगर्भ के प्रत्येक पदार्थों का त्रैकालिक यथार्थ ज्ञान जिस शास्त्र से हो, वह ज्योतिषशास्त्र है। ज्योति आकाशीय पिण्डों, नक्षत्रों और ग्रहादि से आती है, परन्तु ज्योतिष में सभी पिण्डों का अध्ययन नहीं होता। यह अध्ययन केवल सौरमण्डल तक ही सीमित है। ज्योतिष का मूलभूत सिद्धान्त है कि आकाशीय पिण्डों का प्रभाव सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर पड़ता है। इस प्रकार मानव-संसार पर भी इन नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि का प्रभाव पड़ता है और इस प्रभाव को देखने या जानने के लिए हमें ज्योतिषरूपी नेत्र की आवश्यकता होती है। 'धातवः अनेकार्थाः' के सिद्धान्तानुसार 'दृशिर् प्रेक्षणे' तथा दृश् धातु ज्ञानार्थक होने से ज्योतिषशास्त्र से त्रैकालिक प्रभाव को जाना जा सकता है, इसीलिए यह भगवान् वेद का प्रधान अंग-नेत्र है। अतः अन्य शास्त्रों की अपेक्षा इसी विशेष महत्ता सर्वविदित है। कहा गया है-

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।।

अर्थात् समस्त शास्त्र अप्रत्यक्ष हैं तथा विभिन्न शास्त्रों में एक-दूसरे के मतों का खण्डन-मण्डन के कारण विवादमात्र ही है, परन्तु एक ज्योतिषशास्त्र ही ऐसा है, जो प्रत्यक्ष है, जिसके साक्षी चन्द्र तथा सूर्य हैं।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

भारतीय ज्योतिषशास्त्र वेदांग के साथ-साथ जीवन-पद्धति के रूप में भी माना जाता है। मनुष्य के जीवन में ज्योतिष की उपयोगिता पग-पग पर दिखलाई देती है। प्राणी किसी भी देश का हो, किसी भी स्थान का हो, किसी भी धर्म या जाति का हो, काल की सीमा में आबद्ध है। काल के नियामक प्रमुख रूप से सूर्य और चन्द्रमा हैं। इनकी स्थिति एवं गति का ज्ञान कराने वाला शास्त्र ज्योतिषशास्त्र है।

ज्योतिषशास्त्र का वेदाङ्गत्व

वेदेषु विद्यासु च ये प्रदिष्टा
धर्मादयः कालविशेषतोऽर्थाः।
ते सिद्धिमायान्त्यखिलाश्च येन
तद्वेदनेत्रं जयतीह लोके।।

अर्थात् वेदों तथा अन्य विद्याओं में कालविशेष पर आधारित जो धर्म-कर्मादि निर्दिष्ट हैं, वे सभी जिस विद्या के प्रभाव से सिद्ध होते हैं, वेद के चक्षुःस्वरूप उस ज्योतिषशास्त्र की इस संसार में जय हो।

वेदों के छः अङ्ग कहे गए हैं-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष-

शिक्षा व्याकरणं कल्पो निरुक्तं ज्यौतिषं तथा।
छन्दः षडङ्गानीमानि वेदानां कीर्तितानि हि।।

वेदों का सम्यक् ज्ञान कराने के लिए इन छः अङ्गों की अपनी विशेषता है। मन्त्रों के उचित उच्चारण के लिए शिक्षा का, कर्मकाण्ड और यज्ञीय अनुष्ठान के लिए कल्प का, शब्दों के रूपज्ञान के लिए व्याकरण का, अर्थज्ञान के निमित्त शब्दों के निर्वचन के लिए निरुक्त का, वैदिक छन्दों के ज्ञान हेतु छन्द का और अनुष्ठानों के उचित कालनिर्णय के लिए ज्योतिष का उपयोग मान्य है।

इस प्रकार ज्योतिष वेद का एक अंग है। 'अंग' शब्द का अर्थ सहायक होता है अर्थात् वेदों के वास्तविक अर्थ का बोध कराने वाला।'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते अमीभिरिति अङ्गानि' अर्थात् जिन उपकरणों की सहायता से किसी तत्त्वविशेष का परिज्ञान हो, उन्हें अंग कहा जाता है। तात्पर्य यह है कि वेदों के यथार्थ ज्ञान में और उनमें वर्णित विषयों के प्रतिपादन में सहयोग प्रदान करने वाले समर्थ शास्त्र का नाम वेदांग है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

ज्योतिष वह विद्या या शास्त्र है जिसमें आकाश में स्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है। नभमण्डल में स्थित ज्योतिः (ग्रह-नक्षत्र) सम्बन्धी विविधविषयक विद्या को ज्योतिर्विद्या कहते हैं और जिस शास्त्र में उसका उपदेश या वर्णन रहता है, वह ज्योतिषशास्त्र कहलाता है-**'ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रं ज्योतिःशास्त्रम्'**।

ज्योतिषशास्त्र भारतीयों की अमूल्य निधि है। यह जितना व्यापक है, उतना व्यावहारिक भी है। प्रयोगात्मक दृष्टि से वैज्ञानिकों तथा विद्वानों की गवेषणात्मक उत्कण्ठा की परितृप्ति के लिए इसमें अक्षुण्ण वस्तुभण्डार उपलब्ध है।

महर्षि पाणिनि ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है-'ज्योतिषायनं चक्षुः'। जैसे मनुष्य बिना चक्षु इन्द्रिय के किसी भी वस्तु का दर्शन करने में असमर्थ होता है, ठीक वैसे ही वेदशास्त्र या वेदशास्त्रविहित कर्मों को जानने कि लिए ज्योतिष का अन्यतम महत्त्व सिद्ध है। भूतल, अन्तरिक्ष एवं भूगर्भ के प्रत्येक पदार्थ का त्रैकालिक यथार्थ ज्ञान जिस शास्त्र से हो, वह ज्योतिषशास्त्र है। अतः ज्योतिष ज्योति का शास्त्र है। वेद के अन्य अङ्गों की अपेक्षा अपनी विशेष योग्यता के कारण ही ज्योतिषशास्त्र वेदभगवान् का प्रधान अङ्ग-निर्मल चक्षु माना गया है और इसका अन्य कारण यह भी है कि भविष्य जानने की इच्छा सभी युगों में मनुष्यों के मन में सर्वदा प्रबल रहती है, जिसकी परिणति यह ज्योतिषशास्त्र है।

नेत्र का कार्य है सम्यक् अवलोकन। यह नेत्र मानव के सामान्य नेत्र के समान नहीं है, जिसमें भ्रम-लिप्सा एवं प्रमाद आदि के कारण दृष्टिदोष हो जाने से यथार्थ ज्ञान भी मिथ्या प्रतीत होने लगता है, फलतः तथ्य से परे धारणा बन जाती है, किन्तु वेदपुरुष का नेत्र एक ऐसा नेत्र है, एक ऐसी दिव्यदृष्टि है, जिस दृष्टि से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और समस्त जीवनिकाय का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, व्यवहित-अव्यवहित समस्त कर्म हस्तामलकवत् स्पष्ट दृग्गोचर होने लगता है।

ज्योतिषमान आकाशीय पिण्डों का अध्ययन ही ज्योतिषशास्त्र है। अतः सृष्टि के आरम्भ में सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि के सृजन के साथ ही ज्योतिषशास्त्र के विवेच्य विषय अस्तित्व में आ गये। प्रारम्भ में यह शास्त्र वेदों के समान ही श्रुति परम्परा द्वारा संरक्षित रहा तथा कालान्तर में ज्योतिष शास्त्र से सम्बन्धित स्वतंत्र साहित्य की भी रचना हुई। वैदिक संहिताओं में उपलब्ध ज्योतिषशास्त्रीय छिटपुट उल्लेखों से लेकर

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

ज्योतिषशास्त्रीय स्वतंत्र साहित्यों के रचना क्रम के मध्य एक लम्बी कालावधि का अवकाश रहा है। स्पष्ट है कि ज्योतिष शास्त्र की इस समृद्ध परम्परा को निश्चित होने में एक लम्बा समय लगा है। अतः ज्योतिष साहित्य की परम्परा का अध्ययन करने के लिए संस्कृत साहित्य के विकास क्रम को ही आधार मानकर ज्योतिष साहित्य विषयक परम्परा को स्पष्ट किया जा सकता है।

समस्त लौकिक एवं पारलौकिक ज्ञान के मूल वेद स्वीकार किए गए हैं किन्तु वैदिक ऋचाएं अर्थ की दुरुहता से युक्त हैं अतः इनके अर्थ को समझने के लिए वेदाङ्गों का आविर्भाव हुआ। वेदाङ्ग संख्या में छः माने गए हैं किन्तु ज्योतिषशास्त्र इन वेदाङ्गों में सर्वाधिक रोचक विषय है क्योंकि मनुष्य जबसे इस पृथिवी पर वर्तमान मानवसदृश रूप में आया तभी से उसकी रुचि आकाश के विभिन्न रहस्यों, गतिविधियों एवं कार्यों को जानने की रही है अर्थात् नभोमण्डल में स्थित विविध ग्रह, नक्षत्र, तारा आदि मानव को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं और मानवजीवन को ये किस प्रकार प्रभावित करते हैं या जानने का एकमात्र साधन ज्योतिष ही है। इसी जिज्ञासा के समाधान हेतु इस शास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

वेदाङ्गों की संख्या छः है जो इस प्रकार हैं-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दः तथा ज्योतिष। मुण्डकोपनिषद् के प्रथम अध्याय में सर्वप्रथम समस्त ज्ञान को परा एवं अपरा विद्या के मध्य विभक्त कर षड् वेदाङ्गों का नामतः उल्लेख मिलता है-

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः।

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति।।

वेदों में कहे गए, यज्ञकर्म प्रवृत्ति के लिए, जो यज्ञादिकर्म कहे गए हैं वे काल के अधीन हैं। अतः जिस शास्त्र से काल का बोध होता है वह वेदाङ्ग है अर्थात् वह शास्त्र वेदों का अङ्ग है। ज्योतिषशास्त्र क्योंकि काल की गणना करता है, तथा काल का बोध कराता है, अतः यह वेदाङ्ग है-

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता यज्ञाः प्रोक्तस्ते तु कालाश्रयेण।

शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद्वेदाङ्गत्वं ज्यौतिषस्योक्तमस्मात्।।

वेदशास्त्र हमें यज्ञकर्म करने के लिए प्रवृत्त करता है। शुभकाल में यज्ञादि शुभकर्म सफल होते है तथा दूषित काल में किए गए अभीष्ट कार्य असिद्ध होते हैं। शुभाशुभ काल तथा तिथि वारादि का ज्ञान

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

ज्योतिषशास्त्र के द्वारा होता है, अतः यह वेदों के छः अङ्गों में से एक होता है। यह भास्कराचार्य ने उक्त श्लोक में कहा है।

शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण वेदों का मुख है, ज्योतिषशास्त्र चक्षु है, निरुक्त कर्ण हैं, इनकी शिक्षा नासिका है तथा छन्द वेदों के दोनों पैर हैं और कल्प उसके हाथ हैं। ये सभी वेदों के ज्ञान प्रवर्तक होने से वेदों के छः अङ्गशास्त्र कहे गए हैं-

शब्दशास्त्रं मुखं ज्यौतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ।

या तु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः।।

वेदों के सभी छः अङ्गों में चक्षु की मुख्यता होने के कारण ज्योतिषशास्त्र को इनमें मुख्य कहा गया है क्योंकि कर्ण, नासिकादि अङ्गों में यदि चक्षु न हो तो शेष अङ्गों के होने पर भी कुछ नहीं होने के तुल्य है। नेत्रों के न होने पर कोई कुछ नहीं कर सकता-

वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्यौतिषं मुख्यता चाङ्गमध्येस्य तेनोच्यते।

संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिभिश्चक्षुषाऽङ्गेन हीनो न किञ्चित्करः।।

वस्तुतः ज्योतिष की नेत्र-संज्ञा यज्ञ-यागादि अनुष्ठानों के लिए काल को प्रकाशित करने के कारण ही है। वेद के अन्य अंगों की अपेक्षा अपनी विशेष योग्यता के कारण ही ज्योतिषशास्त्र वेदभगवान् का प्रधान अंग-निर्मल चक्षु बन गया है और इसका अन्य कारण यह भी है कि भविष्य जानने की इच्छा सभी युगों में मनुष्यों के मन में सर्वदा प्रबल रही है, जिसकी परिणति यह ज्योतिषशास्त्र है। कृषि, व्यापार, उद्योग, यज्ञ, सदाचार, धर्म, व्यवसाय तथा जीवन-यात्रा हेतु शुभकाल निर्णय के लिए ज्योतिष ही एकमात्र साधन है। कर्मों का कौन काल श्रेष्ठ है, कौन मुहूर्त उत्तम है, इसे व्याकरणादि शास्त्रों से नहीं जाना जा सकता।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi